हिन्दी-गौरव-ग्रन्थमालाका छठा ग्रन्थ ।

स्वदेशाभिमान



लेखक,
श्रीयुत पं० विनायक कोंडदेव ओक



अनुवादक,
श्रीयुत पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी



प्रकाशक,
गाँधी हिन्दी-पुस्तक भण्डार,
प्रयाग ।



तृतीय संस्करण



मूल्य पाँच आना

यह पुस्तक क्यों लिखी गई ।



इसका उत्तर इतना ही है कि इस बातको सब लोग जान सकें कि स्वदेशाभिमान कितना बड़ा गुण है और इसकी पूर्णताके लिए अन्य सुशिक्षित राष्ट्रोंने क्या क्या काम किये हैं ।

अनुक्रमणिका।



स्वदेशाभिमान

यह तलवार ले।

अमेरिकन लोगोंके साथ जब अँगरेज़ोंका युद्ध हुआ, तब स्टोनों-की एक लड़ाईमें कर्नल ओवेन राबर्ट्स घायल होकर गिर पड़ा था। उसका पुत्र भी उसी लड़ाईमें था। अपने पिताके घायल होने-का समाचार सुन कर वह उसके पास दौड़ा आया। पुत्रको बहुत उदास देख कर मृतप्राय वीर कर्नलने बड़ी गम्भीरतासे कहा—"बेटा, इस समय तुझे अपने पास देख कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। यह तलवार ले, और देख आजतक इसका कभी अपमान नहीं हुआ है। अतएव तेरे देशकी स्वतंत्रतापर आज जो महा संकट आया है वह जबतक टल न जावे, तबतक तू इसे विश्राम न देना। आशीर्वाद! तू अब अपने कामपर जा।"



मेरा घर जल जायगा तो क्या होगा!

अमेरिकन लोगों और अँगरेज़ोंमें जब युद्ध हो रहा था तब एक बार जेकब मोटी नामक एक ग़रीब स्त्रीके घर कुछ अँगरेज़ोंने जाकर

आश्रय लिया। यह देख अमेरिकन सैनिकोंने विचार किया कि उस घरमें आग लगा दी जाय। यह विचार लेफ्टनेंट कर्नल लीने जब उस स्त्रीपर प्रगट किया तब उसे कुछ भी दुःख नहीं हुआ; और वह बड़े उत्साहसे बोली—"मेरा घर जल जायगा तो क्या होगा? उसके जलनेसे मेरे देशका तो कुछ-न-कुछ कार्य बनता है! इससे मैं यही समझूँगी कि मेरा घर काममें लग गया। और उसे जलता हुआ मैं आनन्दसे देखूँगी।" यह केवल बातूनी जमा खर्च नहीं था; किंतु उस घरमें आग लगानेके लिए पलीता स्वयं उस स्त्रीने ही तैयार कर दिया था!



हमारे अधिकारोंको सुरक्षित रहने देनेपर ही तुम हमारे राजा हो।

स्पेन देशमें आरागान नामक एक प्रांत है। वहांके सरदार लोगों-ने स्पेन देशके राजाके गद्दीपर बैठते समय जो शपथ ली उससे जान पड़ता है कि यद्यपि वे राजभक्त थे, तो भी स्वतंत्रताका तेज उनमें कम नहीं था। वह शपथ इस प्रकार थी—"हम, आरागान रियासतके सरदार प्राचीन कालसे स्वतंत्र चले आते हैं। इस लिए हम महाराजकी बराबरीके हैं—अथवा उनसे कुछ अधिक ही हैं। अबसे हम सब लोग महाराजको अपना राजा स्वीकार करते हैं;

पर उसमें एक बड़ी शर्त है। वह यह है कि महाराजको हमारे हक़ों और हमारे अधिकारोंकी रक्षाका पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिये; इसमें फ़र्क़ न पड़ने पावे। बस, तभीतक महाराज हमारे राजा हैं। और यदि इसमें ज़रा भी अन्तर पड़ा तो फिर हम महाराजको अपना राजा कदापि नहीं मानेंगे।"



निजके यशकी अपेक्षा राष्ट्रका यश बड़ा है।

प्राचीन कालमें ग्रीस देशकी स्पार्टा रियासतमें पिडार्टस नामक एक अच्छा शिक्षित नवयुवक था; और उस रियासतके दरबारमें तीन सौ स्थान योग्य मनुष्योंके लिए ख़ाली थे। उनमेंसे एक स्थान प्राप्त करनेके लिए वह नवयुवक प्रयत्न कर रहा था। परन्तु अन्त-में उसे उनमेंसे एक भी स्थान नहीं मिला! इसपर उसके मित्रोंने समझा कि इसे स्थानके न मिलनेका बड़ा खेद हुआ होगा। इस लिए वे लोग शिष्टाचारके अनुसार उसको समझाने लगे। पिडार्टसने उनसे कहा—"आप मुझे समझाते क्यों हैं? मुझे इस बातका कुछ खेद नहीं हुआ कि मुझे उनमेंसे कोई स्थान क्यों नहीं मिला; किन्तु उल्टा आनन्द ही हुआ है; क्योंकि इससे यह बात स्पष्ट हो गई कि मेरी इस रियासतमें मुझसे अधिक सुयोग्य तीन सौ पुरुष मौजूद हैं!"



सफ़ेद झंडा और लाल झंडा ।

सन् ११०७ में पोलैण्डके ड्यूक बोलेसलासने बेलगार शहरको घेर कर अपने एक आदमीके द्वारा भीतरके लोगोंके पास एक सफ़ेद और एक लाल झंडा भेज कर कहला भेजा कि "यदि तुम्हें संधि करना हो सफ़ेद झंडा रख लो; और यदि लड़ाई करना हो तो लाल झंडा रख लो।" इसपर वहांके लोगोंने उन दोनों झंडोंको रख लिया और झंडा लानेवालेसे कहा कि "हम दोनों झंडे रखे लेते हैं, तुम बोलेससे जाकर कह दो कि हमने जो सफ़ेद झंडा रक्खा है, उसका मतलब यह है कि हम लोग संधि करनेको तैयार हैं; और लाल झंडेको रखनेका आशय यह है कि यदि तुम संधि नहीं करोगे तो उसके लिए हम रक्तपात करनेको भी तैयार हैं।"



मृत्यु स्वीकार है, पर देशका अपमान स्वीकार नहीं है।

मेजर आंड्रे एक अँगरेज़ सरदार था। अमेरिकनोंने उसे पकड़ कर सेंट आगस्टाइन क़िलेमें क़ैद कर रक्खा था। वहीं कर्नल ग्लेज़र नामक अँगरेज़ सरदारके अधिकारमें गैडसडेन नामका एक उच्च अमेरिकन सरदार भी बहुत दिनोंसे क़ैदमें था। कर्नल ग्लेज़रको ज्यों ही मालूम हुआ कि उधर आंड्रेका वध होनेवाला है, त्यों

ही उसने गैडसडेनसे कहला भेजा कि 'आंडे को मरते देर नहीं कि बस तुम्हारा भी अन्त समीप है।' यह संदेशा जिस सिपाहीने जाकर उसे सुनाया उससे गैडसडेनने कहा—"तू ग्लेज़रसे जाकर कह दे कि मैं अपने देशके लिए, जब तुम कहोगे तब मरनेको तैयार हूँ। युद्ध नीतिसे हो, डर कर हो, अथवा मायाजालसे हो, किसी तरह भी वशिंगटन स्वतंत्रताका पक्ष कभी नहीं छोड़ेगा। मैं अपने प्राणों-के बदले राष्ट्रका अपमान नहीं सहूँगा, फांसीपर आनन्दसे चढ़ूँगा। मुझे मृत्यु स्वीकार है, पर देशका अपमान स्वीकार नहीं है।"



मेरा घर है—इसी लिए उसे न बचा रक्खो।

अमेरिकन लोगोंने याकंटौनको घेर कर उसपर तोपोंकी वर्षा शुरू की। आस-पासके सारे घर गिर कर ढेर हो गये। परंतु उनके सेनापति जनरल नेलसनका घर बिलकुल बचा हुआ था; और कुछ अँगरेज़ उसमें छिपे हुए आनन्द कर रहे थे। यह बात जब नेलसन-को मालूम हुई तब उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछनेपर उसे जान पड़ा कि सिपाहियोंने इसपर गोले इस लिए नहीं बरसाये कि यह उनके सेनापतिका घर है। यह देख नेलसनने सिपाहियोंसे कहा—"यह मेरा घर है—इसी लिए तुम्हें उसे न बचाना चाहिए। क्योंकि जैसे यह बात तुम जानते हो कि यह 'मेरा घर है' वैसे ही अँगरेज़ भी जानते हैं; और यही समझ कर कि तुम उसपर गोले

नहीं चलाओगे, अँगरेज़ लोग उसमें छिपे हुए आनन्द कर रहे हैं। परन्तु मेरे घरमें उनका बचाव नहीं होना चाहिए। तुम निःशंक उसपर गोले बरसाओ और मुझे भी देखने दो कि तुम उसपर कैसा निशाना चलाते हो!" यह सुन कर सिपाहियोंने पहले ही एक गोला चलाया, जिससे दो अँगरेज़ मारे गये और शेष उसी दम भाग गये।



मृत्युका दिन ही सुखका दिन है।

ग्रीस देशमें थीब्स और स्पार्टा नामक दो रियासतोंमें युद्ध हो रहा था तब थीबन लोगोंका सरदार छातीमें भाला लगनेके कारण घायल होकर रणक्षेत्रमें गिर पड़ा। उस समय यद्यपि उसे अपने देहकी सुध नहीं थी, तथापि उसका सारा ध्यान अपने हाथियारोंकी ओर लगा हुआ था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि उसके हथियार शत्रुके हाथ न लगने पावें। इसी समय उसका पता लगाते हुए उसीकी ओरके एक सिपाहीने उसके सारे हथियार लाकर उसके सामने रख दिये। उन्हें देख कर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। इसके बाद ही उसे थीबन लोगोंके विजयका समाचार भी सुनाई दिया, तब तो उसके आनन्दकी सीमा ही न रही। वह अत्यन्त हर्षित होकर अपने पासके लोगोंसे बोला—"मेरे मित्रो! आप यह न समझें कि आजका दिन मेरा अन्तिम दिन है; वास्तव-

में यही मेरे सुखका पहला दिन है। आज मेरे सारे मनोरथ पूर्ण हुए। मेरे वैभवका ठिकाना नहीं रहा। आज मेरा देश विजयी हुआ है, अभिमानी स्पार्टन लोगोंकी नाक काट ली गई है, और ग्रीस देश दासत्वसे मुक्त हुआ है। यह सब देख कर आज मैं परलोकको जाता हूँ। बतलाओ तब मेरे समान सुखी आज कौन है?" यह कह कर उसने अपनी छातीसे भालेका फल निकाल कर फेंक दिया। उसके चेहरेपर इस कष्टके समय भी प्रसन्नता दिखाई पड़ रही थी। उसने अत्यन्त आनन्द-पूर्वक एक महासाधुकी तरह प्राण त्याग किये।



इस तेजके सामने हमारा कुछ नहीं चल सकता।

अमेरिकन लोग ग़रीब थे; उनके पास हाथियार नहीं थे; पर उनका धैर्य और साहस दृढ़ था; इसीसे वे अपने कार्यमें सफलता लाभ कर सके। उनमें जनरल मारियन नामका एक सरदार था। उससे कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण बात-चीत करनेके लिये अँगरेज़ लोगोंने जार्ज टाउनसे एक सरदारको भेजा था। बात-चीत हो जाने-पर मारियनने उस सरदारको अपने साथ भोजनके लिए रख लिया। उस समय रसोइयेने वृक्षोंकी छालपर केवल आलूके कुछ टुकड़े लाकर परोस दिये। मारियन उससे बोला कि "बस अब खाना शुरू कीजिए।" इसपर अँगरेज़ सरदारने उससे पूछा—

"क्या आपका भोजन सदा ऐसा ही होता है ?" मारियनने कहा—"भाई, कुछ न पूछिए, आज इतना भी मिल गया, यही बड़ा भाग्य समझिए।" वह अँगरेज़ सरदार जब लौट कर जार्जटाउन आया तब वहाँके अँगरेज़ोंको सब समाचार कह कर कहने लगा—" हमारी ओर आदमी बहुत हैं, इस कारण हम अमेरिकनोंको जीत लें तो इसमें कोई आश्चर्य्य नहीं, पर उनमें जो कुछ तेज मुझे दिखाई दिया वह बड़ा विचित्र है—उस तेजके सामने हमारा कुछ नहीं चल सकता। कदाचित् कुछ समयतक हम उनपर अधिकार चला सकेंगे ; पर सदैव उन्हें अपने अधीन रखना कदापि सम्भव नहीं है।"



प्रखर प्रार्थना।

इङ्गलैंडसे लड़ते समय अमेरिकाकी रियासतोंको जब धनकी बड़ी ज़रूरत पड़ी तब उन्होंने कर्नल जान लारेंसको फ्रांसके दरबारमें एक बहुत बड़ी रक़म उधार मांगनेके लिए भेजा। वहां उसका खूब आदर-सत्कार हुआ; पर जिस कामके लिए वह वहां गया था, उसका कुछ निपटारा होते हुए नहीं देख पड़ता था। प्रधान मंत्री बातें तो बड़ी मीठी मीठी करता पर साफ़ जवाब कुछ न देता था। और इधर अमेरिकासे उसके लिए एकके बाद एक ज़रूरी बुलावे आने लगे। तब उसने एक विचित्र युक्ति सोची, और वहांके

दरबारमें अमेरिकाकी रियासतोंकी ओरसे जो वकील बेंजमिन फ्रेंकलिन था उसे वह युक्ति बतलाई। परन्तु फ्रेंकलिनको उसकी वह युक्ति उद्दंडता भरी ज्ञात हुई; और इसलिए उसे उपयोगमें न लानेके लिए लारेंससे उसने बहुत आग्रह किया। परन्तु वह सब व्यर्थ हुआ। उसने वह युक्ति की और अपना काम निकाल लिया। वह युक्ति यह थी :—राजाने दरबार करके सबकी भेंट ली। उनमें कर्नल जान लारेंस भी था। वह सलाम करनेके पहले एकदम राजाके पास गया और जेबसे एक काग़ज़ निकाल कर उसने राजाके हाथमें दे दिया। उसमें उसने लिखा था :—जो प्रार्थना मैंने की है वह यदि स्वीकार न होगी, अथवा उसके स्वीकार होनेमें यदि देर लगेगी, तो इस तलवारका—जो मेरी कमरमें लटक रही है—उपयोग अपनी रियासतोंकी स्वतंत्रताकी रक्षा करनेमें तो पीछे करूँगा, पहले उसका उपयोग फ्रांसके राज्यका मद चूर करनेमें ही करूँगा; क्योंकि मैं भी इङ्गलैंडकी प्रजाका एक मनुष्य हूँ।" सचमुच यह लिखना बड़े साहसका काम था। पर इसका गुण तत्काल ही हुआ और फ्रांसने अमेरिकाकी रियासतोंको एक बड़ी रक़म ऋण-स्वरूप दी।



हानि सहनेको मैं तैयार हूँ।

सन् १७७५ ई० में अमेरिकन लोगोंने बोस्टन शहरको जा घेरा। उनमें कुछ ऐसे लोग थे कि जिनकी सारी सम्पत्ति बोस्टनमें ही थी। जब उन्होंने देखा कि वह शहर साधारण उपायोंसे हाथ नहीं आता, तब सोचा कि उसपर तोपोंसे गोलोंकी वर्षा की जाय अथवा वहाँके घरोंमें आग लगा दी जाय। उन लोगोंमें जान हानाक नामक एक बड़ा धनवान व्यापारी भी था। उसकी लाखों रुपयोंकी जायदाद बोस्टनमें थी। गोलोंकी वर्षासे उसकी सारी सम्पत्तिके स्वाहा होनेकी नौबत आनेवाली थी। इस कारण सब लोग उसीकी ओर देख रहे थे कि इसके लिए वह क्या सम्मति देता है। परन्तु जान हानाक कट्टर स्वदेशाभिमानी था। अतएव उसने खड़े होकर बड़ी गंभीरतासे कहा—"सज्जनो! इसमें कोई शक नहीं कि बोस्टनमें मेरी बहुतसी सम्पत्ति है। परन्तु स्वदेश-कार्यके आगे मुझे उसकी कुछ भी परवा नहीं है। अपने देशकी स्वतंत्रताकी रक्षाके लिए जिस बातकी आवश्यकता हो उसे आप निस्सन्देह कर सकते हैं, इस विषयमें मेरी पूर्ण सम्मति है। और इसके लिए मेरी कितनी ही हानि हो, मैं उसे सहनेको तैयार हूँ।" जान हानाक बहुत सुशिक्षित था और देशाटन आदिके द्वारा उसका हृदय विशाल हो चुका था। वह बड़ा धैर्यवान भी था। अमेरिकन रियासतोंकी

स्वतंत्रताका जो घोषणा-पत्र प्रकाशित हुआ उसमें सबसे पहले उसके हस्ताक्षर हैं।



धन नहीं स्वदेशाभिमान चाहिए।

मेसिडोनियाका राजा फ़िलिप एथेन्स नगरको अपने हस्तगत करना चाहता था। पर एथेन्सके लोगोंमें कुछ ऐसे स्वदेशाभिमानी शूरवीर थे जिनके सामने उसका कोई बस नहीं चलता था। फोशन नामक एक वीर पुरुष उन सबका मुखिया था। उसको वश करनेके लिए राजाने कुछ लोगोंको, बहुतसे नज़रानेके साथ, उसके पास भेजा। उन लोगोंको देख कर फोशनने उनसे पूछा—"ये नज़राने सिर्फ मुझेही क्यों भेजे गये ? शहरके अन्य लोगोंको क्यों नहीं भेजे गये ?" इसपर उन लोगोंने उत्तर दिया—"आपने अपने सदाचरणसे जो यश प्राप्त किया है, उसे राजा फ़िलिप जानता है; और यह धन उसने आपके पास इसलिए भेजा है जिससे आपके लड़के इस रीतिसे रह सकें जो आपके यशके लिए शोभा दे।" फोशनने कहा—"उस राज्यका यह सारा धन व्यर्थ गया कहना चाहिए। क्योंकि यदि मेरे लड़के मेरे समान होंगे तो वे अपने पूर्वजोंकी एकत्रित की हुई छोटीसी सम्पत्तिका ही यथायोग्य उपयोग करके मेरे समान यश प्राप्त कर सकेंगे। परन्तु उनके

लिए इस लोभमें फँस कर मैं अपनी जन्मभूमिके साथ नमकहरामी कदापि नहीं कर सकता।"

इसके बाद फ़िलिपके पराक्रमी पुत्र सिकन्दर बादशाहने भी फ़ोशनको अपनी ओर मिलानेके लिए उसके पास भेंट भेजी थी। जो वकील वह भेंट लेकर गये थे, उनसे फिर उस देशभक्तने यही कहा—"आप लोग अपने महाराजसे जाकर कहिए कि यह भेंट मुझे नहीं चाहिए। इसे लौटा लीजिए। और उनसे यह कहिए कि आप मुझे जैसा प्रतिष्ठित और सदाचारी समझते हैं, वैसा ही मैं अन्ततक बना रहूँ—ऐसी यदि आपकी इच्छा है तो आप कृपा करके मुझे इस प्रकारके मोहमें फँसानेका यत्न न कीजिए।"



स्वदेशके लिए जीते गड़ जायँ।

प्राचीन कालमें उत्तर अफ्रिकामें कार्थेज और सैरोन प्रान्त बलकुल पास-पास थे। एक बार उनकी सरहद्के विषयमें कुछ झगड़ा उठ खड़ा हुआ; उसके निपटानेके लिए प्रयत्न किया गया, परन्तु वह किसी तरह निपटता नहीं दिखाई दिया। तब अन्तमें उस समयकी गँवारू समझके अनुसार दोनों पक्षोंकी सलाहसे यह निश्चित हुआ कि उन दोनों प्रान्तोंके मुख्य शहरोंसे बिलकुल एक ही समय, दो दो आदमी, एक दूसरेके शहरकी ओर चलें; और उनकी भेंट बीचमें जिस जगहपर हो, उसी जगह दोनों प्रान्तोंकी

सीमा समझ कर विभाग कर लिया जाय। बस, इसी निश्चयके अनुसार दोनों ओरके लोग अपने अपने नगरोंसे चले; परन्तु कार्थेजवाले दोनों आदमी जान-बूझ कर शीघ्रता-पूर्वक चलनेसे अथवा अन्य किसी कारणसे, बहुत आगे बढ़ आये, यहांतक कि सैरीनके लोगोंको उन्होंने उनके शहरके बहुत ही थोड़े अन्तर-पर जा पकड़ा। इससे अवश्य ही कार्थेज राज्यको बहुत अधिक प्रदेश मिलनेका अवसर आया, और सैरीनकी रियासतकी हानि होने लगी। यह देख कर सैरीनवाले बड़े क्रोधित हुए और नाना प्रकारके कुतर्क निकाल कर लड़नेको तैयार हुए। वे कोई बात नहीं मानते थे। अन्तमें यह निश्चित हुआ कि कार्थेजवाले वैसे ही, उन्हीं पैरों, लौट कर अपने नगरको जायँ, अथवा अपनेको सच्चा सिद्ध करनेके लिए वहींके वहीं जमीनमें जीते गड़ जायँ, तो यह सरहद हमें स्वीकार है। यह देख उन दोनों कार्थेजियन लोगोंने इन दोनों शर्तोंमेंसे दूसरी शर्तको बड़े हर्षके साथ स्वीकार कर लिया। वे दोनों भाई भाई थे। उनके वंशका नाम 'फ़िलिनी' था। वे दोनों भाई उस जगह जीवित गाड़ दिये गये, तब कहीं जाकर वह झगड़ा मिटा। परंतु उनके इस आत्म-बलिदानसे कार्थेजको जो बहुतसा प्रान्त मिल गया इसके लिए कार्थजियन लोग उन दोनोंको देवतुल्य मानने लगे।



मरनेको भी तैयार रहो।

जब अँगरेज़ लोग अमेरिकनोंसे लड़ रहे थे, तब कर्नल टार्लिटन नामक एक अँगरेज़ सरदार, एक अमेरिकनके पास गया; और अपनेको अमेरिकनोंका मुख्य सेनापति जार्ज वाशिंगटन बतला कर वहीं रहने लगा। वह अमेरिकन उसका यह कपट न समझ और अपने यहां एक बड़े प्रतिष्ठित मेहमानको आया हुआ देख बहुत हर्षित हुआ। टार्लिटनका उसने बड़ा आदर-सत्कार किया और अँगरेज़ोंपर चढ़ाई करने आदिके सम्बन्धमें उसके जो विचार थे, वे सब उसे बतला दिये। टार्लिटनने भी मज़ेके साथ सब कुछ सुन लिया और चलते समय उससे बोला—'उस बड़े मार्गतक यदि आप स्वयं मुझे पहुंचा आवेंगे तो बहुत अच्छा होगा।' वह अमेरिकन उसके कहनेमें आकर उसके साथ हो लिया और वार्तालाप करते करते बिलकुल उसकी छावनीतक चला गया। कर्नल टार्लिटनके सिपाहियोंने तुरन्त ही उसे क़ैद कर हथकड़ी-बेड़ी पहना दी। वहां वे उसे वह स्थान दिखलानेको ले जाते जहां प्रति दिन अमेरिकनोंको फांसी दी जाती थी और उससे कहते कि 'देखो तुम्हारी भी एक दिन यही दशा होनेवाली है, इसके लिए तुम तैयार रहो।' इसपर वह निर्भय होकर यही उत्तर देता—"खैर, कुछ हर्ज नहीं, मैं अपने देशके लिए मरनेको तैयार हूँ। पर याद रक्खो, मुझे यदि तुमने फांसीपर लटकाया तो मेरी छावनीमें जो

मेरे बहुतसे मित्र हैं वे तुम्हारी ख़बर लिये विना कभी नहीं रहेंगे।" यह देख उन्होंने उसे फाँसीपर न लटका बहुत दिनोंतक जेलमें ही पड़ा रक्खा। जेलमें उसे बड़ा कष्ट हुआ। उसके पैरोंमें बेड़ियोंके घट्टे पड़ गये थे। उन्हें वह अपने मित्रोंको दिखला कर कहा करता था—"भाइयो, अपने देशकी सेवा करते हुए तुम्हें यदि ऐसे कष्ट सहने पड़ें तो तुम उनकी बिलकुल परवा न करो, मरने-तकको तैयार रहो।"



स्वाभिमानसे स्वदेशाभिमान श्रेष्ठ है।

एथेन्सके लोगोंको जब मालूम हुआ कि ईरानका बादशाह वड़ा जर्कसिज़ अपनी बड़ी भारी सेनाके साथ, ग्रीस देशके थिसिली और थ्रूशिया प्रान्तोंसे होकर आटिका प्रान्तपर चढ़ाई करनेके लिए वड़े वेगसे आ रहा है, तव तो उनके हाथ-पैर फूल गये; और उन्होंने समझा कि अब अवश्य ही हमारा नाश होगा। और इसके पहले—जब कि उनके अच्छे दिन थे—उन्होंने अपने लोगोंमें-से ही जिन लोगोंको बहुत कष्ट दिया था उनकी ओर देख देख कर वे यह समझने लगे कि अब शत्रुके यहां आते ही ये सब लोग उनमें मिल जायँगे और फिर हमारी बिलकुल खैर न रहेगी यही सब सोच कर उनके प्राण सूख रहे थे।

इसके सिवा एक बात और भी थी। उनमें आरिस्टैडीज़ नामक एक बड़ा अच्छा और स्वदेशाभिमानी पुरुष था। सब लोग उसकी बड़ी प्रशंसा करते थे। उसकी वह प्रशंसा वहाँके नेताओंसे न सही गई और मत्सर-वश उन्होंने झूठ-मूठ ही उसके सिरपर कोई दोष मढ़ कर उसे देशसे बाहर निकाल दिया था। वह बड़ा शूरवीर था। अतएव उन नेताओंको यह शंका हुई कि कहीं वह शत्रुसे मिलकर अपना बदला न चुकावे, यद्यपि उनकी यह शंका ठीक नहीं थी, क्योंकि आरिस्टैडीज़ इस प्रकारका मनुष्य नहीं था। उन लोगोंकी सूचना पाते ही वह बड़े शुद्ध हृदयसे आनन्द-पूर्वक उनके गरोहमें आ मिला और मुख्य सेनापति थेमिस्टोक्लीज़के अधिकारमें रह कर उसने एथेंसवासियोंकी रक्षा करनेमें कोई बात उठा न रखी। मतलब यह कि उन लोगोंने जो उसे व्यर्थ कष्ट दिया था, उसकी ओर उसने बिलकुल ध्यान नहीं दिया और स्वदेशाभिमानकी पूरी पूरी रक्षा करते हुए उसने अपना कर्तव्य निबाहा। इस विषयमें यह भी कहा जाता है कि जिस समय वे लोग उसे देशसे बाहर निकालने लगे थे उस समय उसने बड़ी गम्भीरतासे कहा था—"परमात्मा करे आरिस्टैडीज़को फिरसे बुलानेका एथेंसवासियोंको कभी मौक़ा न आवे।" पर, वह आया।



स्वीडन स्वतंत्र कैसे हुआ ?

सन् १५२० में डेन्मार्क और नार्वेके राजा दूसरे क्रिस्टियनने स्वीडनको जीत कर पादाक्रान्त किया; और यह समझ कर कि अब यह देश सदैव हमारे ही अधीन रहेगा, स्वतंत्र नहीं होगा, वह वहांके लोगोंपर मनमाना अत्याचार करके कोपेनहेगेनमें विलास करने लगा। परन्तु स्वीडनके लोग उसपर बहुत जल रहे थे और देखते थे कि किस प्रकार इस कठोर राज्यसे हम छुटकारा पा जायँ। परन्तु उनका कोई उपाय नहीं चलता था। उन लोगोंमें गस्टावास नामका एक सरदार था। उसके मा, बाप, भाई और वहनको क्रिस्टियनने तड़पा तड़पा कर मरवा डाला था; और स्वयं उसको भी कई वर्षतक कोपेनहेगेनके जेलमें क़ैद कर रक्खा था। वहां उसे नाना प्रकारके क्लेश भोगने पड़े थे। उसके सारे शरीरपर तरह तरहके चट्टे पड़ गये थे, घावोंके चिह्न बन गये थे। कुछ दिनों बाद किसी युक्तिसे वह उस क़ैदसे छूट कर स्वदेश लौट आया और पर्वतोंमें जाकर रहने लगा; तथा वहींसे लोगोंको एकत्र करने लगा। वह बोलनेमें बड़ा चतुर था। उसने अपने देशका पिछला सारा वृत्तान्त उन लोगोंको वतला कर अपने देशके वैभवका वर्णन किया और डेन्मार्कके राजाने अपने राष्ट्रको किस तरह धूलमें मिलाया, इस बातको उन लोगोंके मनमें अच्छी तरह भर दिया। इसके बाद उसने अपने शरीरके वे

सब चिह्न दिखलाये जो जेलके क्लेशोंसे उसके शरीरपर बन गये थे। इस प्रकार उसने उन लोगोंमें ऐसा कुछ विलक्षण स्वदेशाभिमान उत्पन्न कर दिया कि वे सब उसके पूरे पूरे आज्ञाकारी बन गये। अन्तमें उनको साथ लेकर वह स्वीडनके डेन्मार्की लोगोंपर एकदम टूट पड़ा; और उनका पीछा करते हुए कोपेनहेगेनतक चला गया। वहां दोनों पक्षोंमें संधि हो गई और गस्टावस स्वीडनका राजा हुआ। यह घटना १५२३ की है। इस प्रकार स्वीडन देश दूसरोंके पंजेसे छूट कर स्वतंत्र हो गया। यह गस्टावस और उसके अनुयायियोंकी दृढ़ताका फल है।



मरेंगे, पर भागेंगे नहीं।

सन् १७९८ में जब स्विटज़रलैंडपर चढ़ाई करनेके लिए फ्रांसकी विस्तृत सेना बिलकुल सरहदपर ही आ धमकी तब वहांके लोग बहुत घबड़ा कर अपने देशकी मानगार्टन नामक एक पहाड़ीपर जमा हुए। और वहां वे इस बात पर विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिए। उन्हें कोई उपाय सूझता नहीं था। यह देख उनमेंसे आलायसरेडिंग नामक एक वीर सरदार आगे बढ़ा और बोला—"भाइयो, बड़ी कठिन समस्या उपस्थित है। हमारे मित्र हम लोगोंको छोड़ गये हैं और शत्रु हमको घेरे हुए हैं। अब

यह निश्चय होना चाहिए कि इसी पहाड़ीपर, ऐसे संकटके समय, हम लोगोंके पूर्वजोंने जो शूरवीरता दिखलाई थी वही आज हमको दिखलाना चाहिए अथवा और कुछ करना चाहिए। मौत तो सामने मुँह फैलाये खड़ी है, जिसे उसका भय हो वह यहांसे निस्संकोच चला जावे। उसे हम बुरा नहीं कहेंगे। ऐसे कठिन अवसरपर एक दूसरेके डरसे कोई काम करना अच्छा नहीं। शत्रु-को सामने आते हुए देख कर, स्वयं भाग कर दूसरोंको संकटमें डालनेवाले हजार आदमी हमें नहीं चाहिए—हमें तो सौ आदमी ऐसे चाहिए जो दृढ़ताके साथ युद्धक्षेत्रमें खड़े होकर लड़ सकें। मैं अपने लिए तो कहता हूँ कि कितना ही भारी संकट आवे—चाहे प्रत्यक्ष काल ही सामने आकर क्यों न खड़ा हो जाय—मैं पीछे नहीं हटूँगा। मरूँगा, पर पीछे पैर नहीं दूँगा। और, तुम सबकी भी यदि ऐसी ही दृढ़ता हो तो तुममेंसे कोई दो आदमी अगुआ बन कर आगे बढ़ें और ऐसी प्रतिज्ञा करें।" यह सुनते ही सब लोगोंके हृदयमें स्वदेशाभिमानकी बिजली दौड़ गई और वे एकदम बड़े ज़ोरसे चिल्ला कर बोले—"वीरवर! हम सब तैयार हैं। तुम्हें छोड़ कर कदापि नहीं जायँगे! तुम्हारे ही पीछे रहेंगे।" इसके बाद इसी दृढ़ताके साथ वे लड़े भी। परंतु उस समय उनकी जीत नहीं हुई और फ्रेंच लोगोंने स्विटज़रलैंडको जीत कर पादाक्रांत कर लिया। परन्तु उपर्युक्त जिन पुरुषोंने पीछे न हटनेकी प्रतिज्ञा की थी उनमेंसे एक भी मनुष्य फ्रेंचोंके हाथ नहीं पड़ा और न

उनका दास बना। उनकी प्रशंसा आजतक स्विटज़रलैंडमें हो रही है।



बुढ़ियाका स्वदेशाभिमान।

दक्षिण-अमेरिकामें वेनिज़ुएला एक देश है। उसका बहुतसा भाग पहले स्पेनके अधिकारमें था; और स्पेनियार्ड लोग वहांके लोगोंपर मनमाना ज़ुल्म करते रहते थे। इससे वेनिज़ुएलाकी राजधानी काराकासके निवासियोंने यह निश्चय किया कि इस देशसे स्पेनियार्ड लोगोंको एकदम भगा देना चाहिए। इस षड्यंत्रमें मांटिला नामक एक धनी स्त्रीके तीन लड़के भी शामिल थे। वे तीनों वहाँकी फ़ौजमें नौकर थे। उनके मनमें स्पेनियार्ड लोगोंके विषयमें जैसा द्वेष था वैसा ही उनकी माताके मनमें भी था और वे सब सदैव उन लोगोंकी चर्चा किया करते थे। अन्तमें उस स्त्रीके बड़े लड़केने उकता कर नौकरी छोड़ दी और वह घर आ बैठा; दूसरा लड़का अपने साथियोंको छोड़ कर स्पेनके सूबेदारसे जा मिला और तीसरा अपने शत्रु स्पेनियार्ड लोगोंके हाथमें पड़ गया। स्पेनियार्ड लोगोंने उसके पैरोंमें बड़ी बड़ी बेड़ियाँ पहना कर उसे क़ैदमें डाल दिया। इन तीनोंमेंसे दूसरे लड़केके आचरणपर मांटिला देवीको अत्यन्त क्रोध आया; और उसने तुरन्त ही अपना मृत्यु-

पत्र लिखा कर उसमें यह दर्ज करा दिया कि उसके बाद उसकी सम्पत्तिमेंसे इस लड़केको एक कौड़ी भी न मिले। इसके सिवाय उसने उस लड़केके पास यह भी कहला भेजा कि तू समझना कि तू मेरे लिए मर गया और मैं तेरे लिए मर गई। कुछ काल बाद जब स्पेनका सूबेदार मांटिवर्डी काराकास शहरका शासक हुआ और उसने उस स्त्रीका सारा हाल सुना तब वह उस बुढ़ियाके पास जाकर बोला कि तू अपना मृत्यु-पत्र बदल कर अपने दूसरे लड़केको भी यदि अपनी सम्पत्तिका भाग देगी तो तेरे तीसरे लड़केको—जो जेलखानेमें अतिशय कष्ट भोग रहा है—मैं छोड़ दूँगा। परन्तु उस स्वदेशाभिमानी बुढ़ियाको यह बात अच्छी नहीं लगी; वह मांटिवर्डीपर बहुत नाराज़ होकर बोली—"इस विषयमें मैं जो कुछ कर चुकी हूँ वही मुझे ठीक मालूम होता है। मेरा दूसरा लड़का, अपनी माताका अभिशाप लेकर नरकको जायगा; और छोटा लड़का स्वदेशाभिमानी है, वह पैरोंकी बेड़ियोंके कष्टसे चाहे तड़प तड़प कर मर जाय, पर अपनी माताके आशिर्वादसे स्वर्गको जायगा। संसार उसके यशके गीत गावेगा। मैं उसपर प्रसन्न हूँ। देश-द्रोह करके, लज्जास्पद रीतिसे स्वातंत्र्य-सुख प्राप्त करनेकी अपेक्षा, स्वदेशके हितार्थ, कष्ट सह कर मरना विशेष श्रेयस्कर है।" बुढ़ियाका यह भाषण सुन कर उस सूबेदारको बड़ा आश्चर्य हुआ। उस बुढ़ियाके स्वदेशाभिमानपर वह कुछ नाराज़ अवश्य हुआ पर वह था सद्गुण। उसे वह अपराध तो कह नहीं

सकता था, इस लिए अन्तमें उसे उस बुढ़ियाकी प्रशंसा ही करनी पड़ी।



स्वदेशाभिमानके लिए प्राण देनेको तैयार हूँ।

रोम शहर बननेके दो सौ चालीस वर्ष बाद इटरूरियन लोगोंके राजा पोर्सेनाने बहुतसी सेनाके साथ उसको जा घेरा और उसे हस्तगत करनेके लिए बड़ा तूफ़ान किया; पर उसका फल कुछ न हुआ। और इधर शहरमें अन्न न रहनेके कारण लोग भूखसे पटापट मरने लगे। तब नगरके नेताओंने एक सभा की और उसमें अगले कार्यक्रमके लिए वे विचार करने लगे। सब लोग अपनी अपनी सम्मति दे रहे थे। इतनेमें म्यूशियस सिवोला नामक एक वीर रोमनने उठ कर कहा—'मैं शत्रुकी छावनीमें अकेला जाता हूँ और किसी-न-किसी उपायसे पोर्सेनाके तम्बूमें पहुँच कर उसका वध कर डालता हूँ।' उसकी यह बात सुनकर सबको बड़ा आश्चर्य हुआ और आनन्द भी हुआ। इसके बाद वह साहसी वीर सबकी आज्ञा लेकर वहांसे चला और एकदम पोर्सेनाके तंबूमें पहुँचा। वहाँ उसे दो मनुष्य देख पड़े। उनमेंसे जो उसके बिलकुल पास था, वही उसे वस्त्र वगैरहसे राजा जान पड़ा। इस लिए उसने उसीके पेटमें खंजर भोंक कर उसे वहीं ढेर कर दिया। पर वह राजा न था, नौकर था; और दूसरा जो मनुष्य था

वह राजा था। उसने दौड़-धूप कर तुरन्त ही म्यूशियस-को पकड़ मँगाया और जाँचके लिये अपने सामने बुला कर जब उससे पूछा कि तू कौन है, यह क्या मामला है और तूने यह घोर कर्म क्यों किया ? तब उसने साफ़ साफ़ कहा कि—"मैं एक रोमन हूँ। मुझे म्यूशियस कहते हैं। मैं तुम्हारा शत्रु हूँ। मैंने आज तुम्हें मार ही डाला होता, परन्तु तुम बच गये।" साथ ही उसने कहा, "इतना ही नहीं, किन्तु जितना साहस मुझमें तुमको मार डालने का है उतना ही स्वयं मर जानेका भी है।" ये शब्द कहनेके साथ ही उसने पासमें एक जलते हुए आगके कुंडमें अपना हाथ डाल दिया। उसका हाथ एक लकड़ीकी तरह जलने लगा, पर उसने अपने मुँहसे चूँ तक नहीं किया। उसका यह विलक्षण साहस देख कर राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने म्यूशियसको एक अलग स्थानमें रखनेकी आज्ञा दी और उसका उपचार करवाया। जब वह स्वस्थ हो गया तब उसे छोड़ दिया। उस समय म्यूशियसने पोर्सेनासे कहा—"सच्चे सद्गुणकी योग्यता आपको मालूम हो जाय, इस लिए मैं यह बतलाये देता हूँ कि मेरी ही तरह और भी तीन सौ रोमन लोगोंने आपकी जान लेनेका बीड़ा उठाया है। आपने मुझे चाहे जितना कष्ट दिया होता, पर यह बात मैं कभी आपको न बतलाता। पर आपने बड़ी उदारतासे मेरा सम्मान किया है, इसी कारण उस उदारताका गौरव करनेके लिए मैंने यह बात आपको बतला दी है।" यह सुन कर—फिर चाहे रोमन लोगोंकी

शूरताका गौरव करनेके लिए हो और चाहे उनके डरके कारण हो—राजाने अपनी फ़ौज वहांसे हटा ली। रोमन लोगोंने इसके लिए म्यूशियसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।



स्वतंत्रता दो, नहीं तो मृत्यु दो।

पहले पहल जब इंग्लैंडके अँगरेज़ लोग अमेरिकामें जाकर बसे थे और इंग्लैंडकी सरकार उनपर शासन करती थी तब इंग्लैंडके लोग जिस प्रकार पार्लिमेंटमें लिये जाते थे उस प्रकार अमेरिकाके लोग नहीं लिये जाते थे। इससे यह होता था कि इंग्लैंडके लोग जो क़ानून बनाते थे वह अमेरिकाके लोगोंको चुपचाप मान लेना पड़ता था। अमेरिकाके लोगोंको यह एक बड़ा लांछन जान पड़ा। उन्होंने इसे अपना बड़ा भारी अपमान समझा। इधर इंग्लैंडकी सरकार उनपर नाना प्रकारके कर लगाने लगी। यह उन्हें और भी अनुचित जान पड़ा। आख़िरमें उन्होंने इंग्लैंडके शासकोंसे कहा कि यदि तुम हमपर कर लगाते हो तो हमारे लोगोंको भी पार्लिमेंटमें लो, अन्यथा हमपर कर न लगाओ। अँगरेज़ लोगोंने उनकी यह बात न मानकर उनपर छपे हुए कागज़ोंका और चायका कर लगानेके लिए क़ानून बना दिया। इससे अमेरिकन लोगोंका क्रोध भड़क उठा और वे इंग्लैंडसे लड़नेको तैयार हो गये। सन् १७७५ से १७८३ तक दोनों दलोंमें युद्ध

होता रहा। अन्तमें अमेरिकन लोगोंने इंग्लैंडकी अधीनताका जूआ अपनी गर्दनपरसे फेंक कर अपनी रियासतोंको स्वतंत्र कर लिया। सन् १७७४ की घटना है कि एक दिन वर्जिनिया रियासतकी प्रान्तिक सभामें लोग बिलकुल स्तब्ध बैठे हुए थे; कोई कुछ न बोलता था। यह देख कर पेट्रिक हेनरी नामके एक सभासदने, जो वकील और बड़ा भारी वक्ता था, उठ कर कहा—" भाइयो, यह मौक़ा एक दूसरेका मुँह ताकनेका नहीं है। इस सभामें जो विचार होनेको है उसपर सारे राष्ट्रका जीवन अवलम्बित है। और वह विचार यही है कि 'स्वतंत्र होकर रहना अच्छा है, या गुलाम बन कर।' हमें यदि स्वतंत्र होना है तो उसके लिए युद्ध करना चाहिए। मैं बार बार कहता हूँ कि भाइयो! हमें युद्ध करना चाहिए। जो कुछ बदा होगा वह सब हमारे हथियारों और ईश्वरकी कृपापर अवलम्बित है। इसके सिवाय और दूसरा मार्ग नहीं है। यह कहना व्यर्थ है कि इस मामलेमें कोई तत्त्व नहीं है। केवल शांति-शान्तिका शोर मचानेसे शान्ति नहीं मिल सकती। युद्धका प्रारम्भ हो चुका है। किस समय क्या होता है, इसका कुछ ठिकाना नहीं। हमारे देश-भाई युद्धक्षेत्रमें लड़ रहे हैं, फिर हमीं क्यों चुप बैठे रहें? आपके मनमें क्या है? पैरोंमें बेड़ियाँ पहन कर और गुलाम बन कर क्या इसी लिए बैठे रहें कि हम जीते रहें और शान्ति बनी रहे। पर ऐसा जीना और ऐसी शान्ति किस कामकी? छिः! छिः! ईश्वर करे इस प्रकारका जीना और इस

प्रकारकी शान्ति हमें कभी पसन्द न आवे। लोग कुछ भी कहा करें, पर मैं तो अपने लिए यही कहता हूँ कि मुझे, "या तो स्वतंत्रता दो, नहीं तो मृत्यु दो।" इस पुरुषने अमेरिकन राज्योंको स्वतंत्रता भोगते हुए देखा था।



राज्याधिकार नहीं चाहिए देश-स्वातंत्र्य चाहिए।

एक बार, जब जिनोआ रियासत स्वतंत्र थी, फ्रांसका राजा पहला फ्रांसिस इसे अपने अधीन करनेका प्रयत्न करने लगा। यह समाचार सुन कर जिनोआके एक सरदार डोरियाने उस राजाको एक पत्र लिखाः—"परमेश्वरने जो अधिकार मनुष्योंके व्यवहार सरलतासे चलानेके लिए दिया है उसका उपयोग यदि कोई उन व्यवहारोंके बिगड़नेमें करे तो इसको सिवाय दुरुपयोगके और क्या कह सकते हैं? जिनोआ नगर आज न जाने कबसे लिगूरियाकी राजधानी चली आती है। उसे यदि महाराज नष्ट कर देंगे तो लोग क्या समझेंगे, यह नहीं कहा जा सकता। महाराजके इस कार्य्यसे हमारी जैसी हानि होनेवाली है उसे हम जिनोआ-निवासी अच्छी तरह समझ चुके हैं। इस लिए महाराज इस विचारको छोड़ दें और हलके लोगोंकी सलाहमें आकर, एक छोटेसे मनोरथके सिद्ध करनेमें, अपनी कीर्तिको न खो बैठें। यही हमारी

सबकी प्रार्थना है। इसके सिवाय महाराजकी सेनामें मैंने जो बड़े बड़े काम किये हैं उनका पारितोषिक भी मुझे यही मिलना चाहिए। सरकारको यदि धनकी आवश्यकता हो तो जो भेटें मुझे सरकारने दी हैं वे सब मैं सरकारको लौटा दूँगा और इसके अतिरिक्त, पचास लाख रुपया और नज़र करूँगा।"

राजाने इस पत्रकी ओर बिलकुल ध्यान नहीं दिया और जिनोआपर चढ़ाई करनेकी वह अधिकाधिक तैयारी करने लगा। यह देख कर सालोनाके सूबेदार ट्रिबुलसीसे डोरियाने कहा—"मेरा और आपके स्वामी फ्रांसके राजाका स्नेह अवश्य है, पर स्वदेशकी स्वातंत्र्य-रक्षाके लिए मैं उसपर पानी छोड़नेको तैयार हूँ। और अपने महाराजसे यह कह दीजिए कि मैं इस पक्षमें कुछ धनकी आशासे नहीं मिला हूँ; किन्तु हमारे राष्ट्रसे आपके महाराजका कोई अपराध नहीं हुआ है तो भी उन्होंने इसपर हथियार उठाया है और मेरी प्रार्थनाका अपमान किया है, इसीसे क्रोधित होकर मैंने यह कार्य उठाया है।"

डोरियाने यह सन्देश फ्रांसिसको भेजा। परन्तु इसका परिणाम यह हुआ कि उसे अपना जीव बचानेके लिए जिनोआसे भाग जाना पड़ा, और अन्तमें फ्रेंचोंने जिनोआपर अपना अधिकार कर लिया। इधर डोरिया अपने देशसे भाग कर जर्मनीके बादशाह पाँचवे चार्ल्सके यहाँ जाकर नौकर हो गया

और उसकी सहायतासे उसने जिनोआसे फ्रेंच लोगोंको अन्तमें भगा ही दिया और उसे फिर पूर्ववत् स्वतंत्र कर दिया। फिर वहाँ पहलेकी तरह प्रजासत्ताक-राज्य स्थापित हुआ; और वहाँके लोगोंने डोरियाको ही अपने राज्यका अध्यक्ष—प्रेसिडेंट—बनाया। डोरिया यदि चाहता तो उस समय उस राज्यका बिलकुल स्वेच्छाचारी राजा भी बन सकता था। परन्तु उसके मनमें इस बातका विचार भी नहीं आया। कुछ समय बाद उसने वहांके मुख्य मुख्य लोगोंको बुला कर कहा—"आप लोग जिस प्रकारका राज्य चाहते हों उसी प्रकारका राज्य स्थापित करनेके लिए आप लोगोंको पूर्ण अधिकार है। मुझे राज्याधिकारकी कोई आवश्यकता नहीं है। मैंने इस इच्छाहीको तिलांजलि देदी है। अपने सारे प्रयत्नोंका सबसे बड़ा जो पुरस्कार मैं चाहता हूँ, वह यही है कि मैं अपने इस राज्यको स्वतंत्र देखता रहूँ। मुझे राजा कहलानेकी अपेक्षा अपने नगरका एक नागरिक कहलाना विशेष पसन्द है। मुझे यह राज्याधिकार नहीं चाहिए; और मुझे यह भी पसन्द नहीं है कि मैं अपनी बराबरीके लोगोंपर शासन करूँ या उनको अपना बड़प्पन दिखलाऊँ। इस प्रकार राज्यसत्ताका त्याग करके और अपने राज्यको स्वतंत्र—प्रजासत्ताक—बना कर डोरियाने अपना नाम संसारके इतिहासमें अजरामर कर दिया है।

पूर्वजोंकी अस्थियाँतक शत्रुओंके हाथ हम न लगने देंगे।

अलीपाशाके राज्यके पास ही पार्गा नामक एक छोटासा स्वतंत्र राज्य था। उसे अपनी सत्ताके नीचे लानेकी अलीपाशाको इच्छा हुई। इधर अलीपाशा और इँगलिश सरकारकी मित्रता थी। इस कारण अँगरेजोंने भी उस रियासतको अलीपाशाके अधिकारमें ला देनेका प्रयत्न आरम्भ किया। परन्तु पार्गा-निवासियोंको यह अच्छी तरह मालूम था कि पाशा बड़ा अत्याचारी आदमी है—राक्षस है। अतएव ऐसे अत्याचारी मनुष्यके तंत्रमें जाना उन्हें विषके समान जान पड़ा। वे लोग मुद्दतसे स्वतंत्रताका उपभोग कर रहे थे, अतएव उनके लिए पाशाके अधिकारमें जाना मानों परतंत्रताके घोर नरकमें जाना था। इस कारण उन्होंने यही निश्चय किया कि चाहे कुछ भी हो हम लोग अलीपाशाके अधीन न होंगे। परंतु इँगलिश सरकारका इस विषयमें बहुत आग्रह था, अतएव उसने निश्चय किया कि पार्गाके जो लोग अलीपाशाके राज्यमें न रहना चाहते हों वे राज्य छोड़ कर चाहे जहाँ बाहर जाकर रहें। इससे उनकी जो हानि होगी वह पूरी कर दी जायगी। इसके बाद जब अँगरेज़ कमिश्नर बाहर जाकर रहनेवाले लोगोंकी सूची बनानेके लिए वहाँ आये तब उन्होंने क्या देखा कि उस राज्यका एक एक मनुष्य बाहर जानेके लिए तैयार हो गया

है। इस प्रकार उस राज्यके सारे ही लोग बाहर जानेको तैयार नहीं थे, वल्कि उन्होंने यह भी निश्चय कर लिया था कि वहाँकी पृथ्वीमें जो उनके पूर्वजोंकी अस्थियाँ गड़ी हैं वे भी जला डाली जायँ। इसका मतलब यह था कि वे लोग अपने पूर्वजोंकी हड्डियों-को भी अलीपाशा और उसके साथके लोगोंके समान चांडालोंके हाथोंका स्पर्श होने देना नहीं चाहते थे। यह हाल देख कर अँगरेज़ कमिश्नरोंको बड़ा आश्चर्य्य हुआ और वे उस विषयमें कुछ भी न करके जैसे आये थे वैसे ही वापस चले गये। परन्तु अन्तमें, सन् १८१९ में, अलीपाशासे नहीं रहा गया; और उस रियासतको किसी न किसी तरह अधीन करनेके लिए वह इँगलिश सरकारसे बहुत ही हठ करने लगा। इसके सिवाय उस प्रान्तपर चढ़ाई करनेके लिए एक बड़ी भारी सेना तैयार करके वह उसकी सरहदपर ले आया। यह समाचार जब अँगरेज़ कमिश्नरोंने पार्गाके लोगोंसे जाकर कहा तब वे लोग बिलकुल नहीं डरे और उन कमिश्नरोंसे उन्होंने साफ़ कह दिया—"हम लोगोंमेंसे एक एक मनुष्यके यहाँसे चले जानेके पहले यदि अलीपाशाके लोग यहाँ आवेंगे तो पहले हम अपने ही हाथों स्त्री-बच्चोंका संहार कर डालेंगे, फिर अपने पूर्वजोंकी अस्थियोंको क़बरोंसे निकाल कर जला डालेंगे और फिर जबतक हम लोगोंका एक भी आदमी जीता बचेगा तबतक लड़ेंगे—यह तुम अच्छी तरह समझ लो।"

इस प्रकार जब यह देखा गया कि ये लोग अत्यन्त क्रुद्ध होकर प्राणोंको भी दे देनेके लिए तैयार हैं तब इँगलिश सरकारने उनको शान्त करनेके लिए सर फ्रेडरीक ऐडमको उनके पास भेजा। वह पैदल ही उस नगरमें पहुँचा। वहाँ जाकर उसने क्या देखा कि प्रत्येक घरके बाहर दरवाज़ेमें घरका मालिक हाथमें बन्दूक़ तलवार लिये खड़ा है और घरके स्त्री-बच्चे यह समझ कर कि अब बहुत जल्दी हमारे प्राण जायँगे, अत्यन्त चिन्तातुर होकर रो रहे हैं। इसके बाद जब वह शहरके चौकमें गया तो क्या देखता है कि उनके पूर्वजोंकी हड्डियोंका एक बहुत बड़ा ढेर लगा हुआ है, जिसमें आग लगाने भर की देरी है! यह सब देख कर उसे विश्वास हो गया कि ये लोग अपने विचारके बड़े पक्के हैं और ऐसा भयंकर अनर्थ होने देना उचित नहीं है। यह सोच कर वह तुरन्त ही अलीपाशाकी छावनीकी ओर, जो सरहदपर पास ही थी, गया और उसने अलीपाशासे यही प्रार्थना की कि आप कुछ भी कीजिए पर अब आगे न बढ़िए। पाशाने उसकी प्रार्थना मान ली। परन्तु यह समाचार जब वह उन लोगोंको बतलानेके लिए नगरमें गया तो क्या देखता है कि चौकमें एक बड़ा भारी राखका ढेर लगा है और सारे घर उजाड़ हो रहे हैं! यह देख कर उसे अत्यन्त दुःख हुआ।

* * *

जहाँ तुम वहाँ हम।

इंग्लैंडके राजा तीसरे एडवर्डने फ्रांसकी राजधानी केलेपर घेरा डाल कर वहाँके लोगोंको इतना हैरान किया कि उनके खानेको अन्नतक नहीं रहा। वे बेचारे घास, ज़मीनके कीड़े और खालके टुकड़े उबाल उबाल कर खाने लगे और अपने दिन बिताने लगे। अन्तमें जब उन्हें यह भी न मिलने लगा और मरने तककी नौबत आ गई तब उनके मुख्य सूबेदार पूस्टेस सेंट पायरीने विचार किया कि हमारे लोग जब अन्नके बिना इसी जगह मर रहे हैं तब इससे तो यही अच्छा है कि हम दाँतोंमें तृण रख कर शत्रुके आधीन हो जायँ। अपना यह सन्देसा उसने तुरन्त ही बाहर कहला भेजा। पहले तो वह सन्देसा एडवर्डको बिलकुल अच्छा नहीं लगा क्योंकि वे लोग विलक्षण धैर्यशाली थे और इसी कारण दो वर्षतक राजा को घेरा डाल कर पड़ा रहना पड़ा था। परन्तु जब उन लोगोंने बड़ी दीनता दिखलाई तब उसने अन्तमें उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। परंतु फिर भी बदला लेनेकी गरज़से उसने एक यह भी शर्त रक्खी कि 'उस शहरके लोगोंमेंसे छः वीर पुरुष, मुश्कें बँधे हुए, मेरे सिपुर्द होने चाहियें। मैं अपनी इच्छानुसार उनका जो चाहूँगा वह करूँगा।' यह बात उन्हें बहुत ही खली। क्योंकि वे लोग जानते थे कि अपने क्रोधको शान्त करनेके लिए वह उन छहों आदमियोंको अत्यन्त कष्ट देकर मार

डालेगा। परन्तु राजाकी यह शर्त स्वीकार किये विना नगरका भी वचाव नहीं होता था। इस लिए इस सम्बन्धमें विचार करनेके लिए पायरीने सब लोगोंको अपने यहाँ बुलाया और उनसे कहा— 'मेरे मित्रो और देश-बंधुओ, हम लोगोंकी क्या दशा हुई है, वह सब आप लोगोंको विदित है। उसके विषयमें अब विशेष कुछ कहनेकी आवश्यकता नहीं है। हम लोगोंके लिए अब दो मार्ग हैं—या तो हमारा क्रूर शत्रु जो कुछ माँगता है वह हम उसे दे दें अथवा अपने स्त्री-बच्चोंको उसके अधीन करके वह जो अपमान करे उसे चुपचाप सह लें! इन दो बातोंमेंसे कोई एक बात अवश्य स्वीकार करनी पड़ेगी। हमारा सर्वस्व लेकर भी उस अधमको सन्तोष नहीं होता। और इस लिए अब वह हमारे हाथों ऐसा महापाप करा रहा है कि जिसके कारण हम लोगोंकी संसारमें बड़ी भारी निन्दा होगी; और हम लोगोंका मुख भी देखना लोग पाप समझेंगे। परन्तु मित्रो! ऐसा जीना किस कामका? इस प्रकार जीकर संसारमें रहनेसे मरना ही अच्छा है! तो अब वे छः आदमी कौन हैं; तलाश करो और उन्हें जल्दी रवाना करो। हाय! जिन लोगोंने नाना प्रकारके कष्ट सह कर, अपना रक्त-मांस खर्च करके और हड्डियाँ घिस घिस करके इस नगरकी और हम सब की रक्षा करनेमें घोर कष्ट सहा है, उनमेंसे अब छः महापुरुषोंको शत्रुके हाथमें देना पड़ेगा कि जिनको वह कष्ट दे दे कर मरवा डालेगा! भाइयो! जिन लोगोंने हमारी रक्षा की, क्या हम उनका बध करवायें? न्याय, उदारता

और दया सब मिल कर इस विचारका निषेध करते हैं। इस विचारको वे मनमें भी नहीं आने देते। इसका परिणाम सोचनेसे शरीरमें रोमांच हो आता है, हृदय काँपने लगता है। पर करोगे भी क्या? ऐसा कोई दूसरा उपाय भी हो जिससे लोक-निन्दा और अपमान न हो तथा अपने नगरका विध्वंस होनेसे बच जाय? प्यारे मित्रो! मेरी समझमें एक उपाय आता है; परंतु उसे सफल होनेके लिए मनुष्य चाहिये। वह मनुष्य ऐसा हो कि जिसे मृत्यु स्वीकार हो; परलोक निन्दा स्वीकार न हो। ऐसा कोई मनुष्य यहाँ है? हो तो वह आगे आवे; और अपने प्राण अर्पण करके देशकी रक्षा करे। इसमें सन्देह नहीं है कि उस मनुष्यको मोक्ष प्राप्त होगा।

सब लोग चित्र-लिखेसे स्तब्ध होकर पायरीका यह भाषण सुनते रहे; और उसके समाप्त होनेपर एक दूसरेकी ओर एकटक देखने लगे। उनकी ओर देख कर और मन में कुछ यादसा करके पायरी स्वयं कुछ आगे बढ़ कर बोला—"अहा! क्या ही अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है; मैं स्वयं ही इस अवसरको क्यों हाथसे जाने दूं? मैं अपने देश-बंधुओंकी रक्षाके लिए स्वयं शत्रुके हाथमें जानेको तैयार हूँ। अब पाँच और चाहिये!" यह सुन कर उसीका लड़का जो बिलकुल नौजवान था, आगे बढ़ कर बोला—"पिताजी, मैं भी आप के साथ चलनेको तैयार हूँ, इससे मेरा भी जीवन सफल होगा।" उसको अपने पास लेकर पायरी बोला—"फिर क्या कहना, मेरे समान कौन भाग्यशाली है! बड़ी अच्छी

बात है, लेकिन और चार कौन हैं ? इसपर चार मनुष्य और उन लोगोंमेंसे निकल आये। इस प्रकार छः आदमी दाँतोंमें तृण रख-कर और मरनेका निश्चय कर स्वदेशकी रक्षाके लिए अँगरेज़ोंके अधीन हो गये। तब केले नगरका छुटकारा हुआ। परन्तु विचि-त्रता यह हुई कि उन छः आदमियोंपर एडवर्डकी पत्नी, रानी फिलिपाको बहुत दया आई; और वे छोड़ दिये गये। इसके बाद वे बड़ी प्रतिष्ठाके साथ स्वदेशको लौट आये।



स्वदेशाभिमान और राष्ट्र-स्वातंत्र्य

स्विटज़रलैंड कितने ही वर्ष तक आस्ट्रियाके अधिकारमें था। वहाँके लोगोंपर आस्ट्रियाके सूबेदार शासन करते रहते थे। ये सूबेदार वहाँके लोगोंपर मनमाना अत्याचार करते थे—यहाँतक कि स्विटज़रलैंडके लोगोंको आस्ट्रियन लोगोंके सामने बिलकुल गुलामकी तरह रहना पड़ता था। सन् १४०७ में वहाँका जो सूबेदार था उसका नाम जेस्लर था। वह बड़ा अत्याचारी था। वह समझता था कि मेरे कुत्तेकी जितनी प्रतिष्ठा है, उतनी एक बड़े स्विस मनुष्यकी भी नहीं है। इसके सिवाय जेस्लरके नीचेके अधिकारी भी स्विस लोगोंके साथ बड़ा बुरा वर्ताव करते थे। एक दिनकी बात है कि आलटार्फ नगरके बाज़ारमें

बड़ी भीड़ लगी हुई थी और वहाँके अत्याचारके विषयमें बहुतसी बातें हो रही थीं। यह देख कर एक आस्ट्रियन सरदार अपने साथ कुछ सिपाही लेकर वहाँ आया और जेस्लरके अत्याचारके विषयमें बात-चीत करते हुए स्विस लोगोंमें जो आनन्द फैल रहा था उसको दबानेका प्रयत्न करने लगा। इसके लिए उसने एक बड़ी ऊँची लकड़ीपर अपने सूबेदार जेस्लरकी टोपी टाँगकर यह आज्ञा जारी की कि रास्तेके सारे आने-जानेवाले लोगोंको इस लकड़ीके पैरों पड़ना चाहिए। और जो ऐसा न करेगा उसको सज़ा होगी। बेचारे लोग भी इस विषयमें ज़रा भी चूँचाँ न करते हुए उस लकड़ीके पैरों पड़ पड़ कर निकलने लगे। इतनेमें एक अच्छे डील-डौल और बड़े ऊँचे क़दका किसान सादे कपड़े पहने हुए वहाँ आ निकला और उस सरदारसे पूछने लगा कि यह टोपी किसकी है। उस अधिकारीने उत्तर दिया कि "यह टोपी जेस्लर साहबकी है और तुम्हें इसके पैरों पड़ना चाहिए।" तब किसानने कहा कि "मैं इसके पैरों कभी न पड़ूँगा। अबतक जेस्लरने हम लोगोंको जो कष्ट दिये हैं उन्हें हम चुपचाप सहते आये हैं। पर अब यह अपमान हमसे न सहा जायगा।" इसके बाद वह वहाँके लोगोंको सम्बोधन करके बोला—"क्यों भाइयो! तुमने पशुकी तरह इस अपमानकारक आज्ञाको मान ही लिया? धिक्कार है तुम्हारे जीनेको!" इस किसानका नाम था टेल। टेलकी इस धृष्टताको देखकर सिपाही लोग उसे पकड़कर जस्लेरके पास ले गये। परन्तु

टेलने एक शब्द भी मिथ्या न बोल कर सारा सत्य वृत्तांत जेस्लरके सामने कह दिया। अवश्य ही जेस्लर उसपर बड़ा क्रुद्ध हुआ और उसने सोचा कि टेलको, साधारण सज़ा न देकर, कोई अत्यन्त क्रूरता और निर्दयताका दण्ड देना चाहिए। इसलिए कुछ सोच कर वह टेलसे बोला—"टेल। मैंने सुना है कि तू बड़ा अच्छा तीरन्दज़ा है—इस कलामें तेरी बराबरी करनेवाला सारे देशमें कोई नहीं है। तुझको अब यह बात सच करके दिखलानी चाहिए, तभी तेरे प्राण बच सकेंगे। और मैं स्वयं इसकी प्रतीति करके देखूँगा; वह इस प्रकार कि तेरे लड़केके सिर-पर मैं एक निम्बू रक्खूँगा। उसे यदि तू—लड़केको कुछ आघात न पहुँचा कर—ऊपरकी ऊपर ही, तीरसे उड़ा देगा तो तेरा बाल भी बाँका न होगा। और इसमें यदि कुछ फ़र्क़ हुआ तो अवश्य ही तू जानसे मार डाला जायगा।" इसका क्या उत्तर दे, यह टेलको नहीं सूझ पड़ा। परन्तु जब उसने देखा कि इन्कार करनेसे कोई लाभ नहीं, तब वह कुछ न बोला और चुप रहा। इधर जेस्लरने तुरन्त ही बाज़ारमें इस खेलकी तैयारी करवाकर टेलको धनुष-बाण लेकर उपस्थित होनेकी आज्ञा दी। तदनुसार टेल भी सज्ज होकर उपस्थित हुआ। यह देख कर लोगोंकी आँखोंसे अश्रुधारायें बहने लगीं और देख पड़ा कि वे सब टेलको सहायता करनेके लिए परमात्मासे हार्दिक प्रार्थना कर रहे हैं। टेल जब बाण छोड़नेको हुआ तब सब लोग चित्रके समान स्तब्ध हो गये। इधर टेलका बाण

लड़केको कुछ भी आघात न पहुँचा कर और उसके सिरपर रखे हुए निम्बूके दो टुकड़े करके निकल गया। यह देखकर सब लोगों-को बड़ा आनन्द हुआ; परन्तु उस जगहसे चलते समय टेलके अँगरखेसे निकल कर एक और बाण नीचे गिर पड़ा। इसपर उससे जब पूछा गया कि यह दूसरा बाण तू क्यों लाया था? तब टेलने जेस्लरसे कहा कि "दुष्ट, यह दूसरा बाण मैं तेरे लिए लाया था और मेरा बाण यदि मेरे लड़केको लगा होता तो इस दूसरे बाणसे मैंने तेरे प्राण लिये होते।" यह सुन जेस्लरने टेलको फिर गिरफ़ार करवा लिया।

उन्हीं दिनों स्विस लोग आस्ट्रियन सरकारको स्विटज़रलैंडसे उखाड़ फेंकनेके लिए एक बड़ा भारी षड्यंत्र भी गुप्त रूपसे रच रहे थे; और टेल उस षड्यंत्रका नेता था। यह षड्यंत्र अब अच्छी तरह तैयार हो गया था। उसका सारा समाचार जब जेस्लरको मालूम हुआ तब वह टेलको साथ लेकर, एक जहाज़के द्वारा किसी दूसरी जगहके लिये चल दिया। इसमें जेस्लरका सिर्फ़ इतना ही उद्देश्य था कि टेल अब उस षड्यंत्रमें न मिलने पावे, अन्यथा मुझे बड़ी विपत्तिका सामना करना पड़ेगा। अस्तु, वह जहाज़ थोड़ी ही दूर गया था कि अचानक कुहरा उठा और जहाज़के डूबनेकी नौबत आ पहुँची। उस समय जेस्लरसे किसीने कहा कि टेल बड़ा अच्छा खेवैया है और वह यदि चाहेगा तो अवश्य जहाज़ बच जायगा। इस लिए जेस्लरके कहनेपर

टेलने पतवार हाथमें लिया और उस कुहरेसे जहाज़को बचा ले गया। इसके बाद फिर वह उसी तरह जहाज़को खेते हुए एक बड़ी चट्टानकी ओर ले चला। उस समय तो यह किसीको नहीं मालूम हुआ कि वह जहाज़को चट्टानकी ओर क्यों लिये जाता है। परन्तु ज्यों ही जहाज़ चट्टानके पास पहुँचा त्यों ही टेल उसपर कूदकर भाग गया और अपने षड्यंत्रकारी साथियोंमें जा मिला। कुछ काल बाद उस षड्यंत्रने बलवेका रूप धारण किया, बलवेने राज्यक्रान्ति करनेका प्रयत्न प्रारम्भ किया; और अन्तमें टेलने जेस्लरको कुस्नाटमें मार कर कुछ ही काल बाद स्विटज़रलैंड-को आस्ट्रियन लोगोंके दास्यसे मुक्त कर दिया। इस प्रकार टेलके उद्योगसे स्विटजरलैंडको स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यह उसके स्वदेशाभि-मानका फल है।



खेद है कि मैंने बहुतोंको क्यों नहीं मारा!

स्काटलैंडके राजा तीसरे एलेक्ज़ेंडरकी मृत्युके बाद उसके वारिसके तौरपर इँग्लैंडका पहला एडवर्ड ही स्काटलैंडका राजा हुआ। स्काटलैंडका जब अपना राजा था तब वहाँके लोगोंपर लगान बहुत ही कम था—यहाँतक कि कहना चाहिए, बिलकुल न था। परन्तु उस देशको एडवर्डके अधिकारमें आते ही उसने

वहाँके लोगोंपर अनेक प्रकारके कर लगा दिये। इस काममें ह्यू-क्रेसिंगहाम नामक एक और पुरुष उसका सहायक था। उसने तो क्रूरता और जुल्मकी बिलकुल हद ही कर दी थी। उन कष्टोंके दूर करनेके लिए स्काच लोगोंने इँग्लैंडके दरबारमें बहुत प्रयत्न किया; परन्तु उसका कुछ फल नहीं निकला। तब वे बहुत ही बिगड़े और उन्होंने सोचा कि जब सरकार सीधे तौरपर कुछ नहीं सुनती तब बल-पूर्वक अपना उद्देश्य सिद्ध करना चाहिए। परन्तु इसके लिए उन्हें किसी एक नेताकी आवश्यकता थी। परमात्माकी कृपासे वह भी उन्हें शीघ्र मिल गया। उसका नाम था सर विलियम वालेस। वालेस बचपनहीसे बड़ा शूरवीर स्वदेशाभिमानी था। उसके बचपनकी एक बात इस प्रकार प्रसिद्ध है कि एक दिन वह आयर गाँवके पास ऐरविन नदीपर मछलियाँ पकड़ रहा था। इतनेमें उसके पास कुछ अँगरेज़ सिपाही आ निकले। ये उस लड़केकी ओर देखते हुए स्वाभाविक वहाँ खड़े हो गये। इसके बाद उनमेंसे एक सिपाही उसकी टोकरीकी सारी मछलियाँ उठा कर चल दिया। वालेस उनमेंसे आधी मछलियाँ अपनी खुशीसे उसे देनेके लिए तैयार था; पर वह सिपाही उतनी मछलियोंसे सन्तुष्ट न होता था। इसपर दोनोंमें झगड़ा होकर अन्तमें मारपीटपर नौबत आ पहुँची। वालेसने बड़े जोरसे अपनी लाठीका एक ठूँसा उस सिपाहीको मार कर और तुरन्त ही झपट कर उस सिपाहीकी कमरसे तलवार खींच ली और बातकी बातमें उन चार

पाँच सिपाहियोंको जानसे मार कर वहाँसे वह रफू-चक्कर हो गया। वह साफ़ छूट गया; परन्तु उसे इस प्रान्तको छोड़कर एक दूसरे प्रान्तमें चले जाना पड़ा। इस घटनासे अँगरेज़ोंके विषयमें उसके अन्दर द्वेषाग्नि खूब ही धधक उठी और मौक़ा मिलनेपर उन्हें अच्छी तरह दुरुस्त करनेका उसने संकल्प किया। इसके बाद अँगरेज़ लोग स्काच लोगोंपर और खूब जुल्म करने लगे। इस कारण स्काच लोगोंमें अत्यन्त असन्तोष फैल गया। उन्हीं दिनों एक दिन वालेस लेनार्कके चोकमें एक मज़ेदार अंगरखा पहने और कमरमें एक उत्तम तलवार लटकाये बड़े ठाट-बाटसे घूम रहा था। इतनेमें एक अँगरेज़ सिपाही उसके निकट जाकर और उसकी दिल्लगी उड़ाते हुए बोला—"तेरे समान बन्दरको इतना अच्छा अँगरखा किसने दे दिया? और जिस तलवारको पकड़ते हुए तेरा हाथ काँपता है उसे तू व्यर्थ क्यों लटकाये फिर रहा है? तेरे लिये तो यह बोझा है!" वालेस उसकी ओर कुछ ध्यान न देकर आगे चला गया। परन्तु इसपर भी उस सिपाहीको चैन नहीं पड़ा और वह उसके पीछे ही पड़ गया। आख़िर उसकी और वालेसकी मुठभेड़ हो गई। इस सपाटेमें भी उसने कई सिपहियोंको लगातार उड़ा दिया; और वहाँसे भाग कर वह अपने घरमें जा छिपा। इसपर बहुतसे सिपाहियोंने जाकर उसका घर घेर लिया। वह बड़ी युक्तिसे अपने पीछेके दरवाज़ेसे निकल कर भाग गया। परंतु उसकी स्त्री घरहीमें रह गई। वह अत्यन्त सुन्दर और

तरुणी थी। वालेसको इसकी बार बार याद आती थी; परन्तु वह यही सोच कर रह जाता कि उसका कोई अपराध नहीं है और वह सुशील तथा सुन्दर है, इस कारण उसकी जान बची रहेगी। परन्तु उसका यह विचार ठीक नहीं निकला। लेनार्कके सूबेदार हेसेलरिजने अत्यन्त क्रुद्ध होकर उसको टुकड़े टुकड़े करके मार डाला। वालेस जब भागा जा रहा था तब उसे अपनी स्त्रीके इस प्रकार मारे जानेका समाचार मिला। उस समयसे तो वह अँगरेज़ों-का कट्टर शत्रु हो गया, और उसने दृढ़ सङ्कल्प किया कि अपने देश-भाईयोंको अँगरेज़ोंके भयंकर कष्टसे छुड़ाये बिना कदापि विश्राम न लूँगा। बस इसी घटनाके बाद तुरन्त ही—जब कि वहाँके लोग नेताकी तलाशमें थे—वालेस जा कर स्काच लोगोंका नेता बन गया।

इस प्रकार जब स्काच लोगोंने सिर उठाया तब आयर प्रान्तके इंग्लिश सूबेदारने उनके बड़े बड़े सरदारोंको एक दिन, रातको, सलाह करनेके बहाने, अपने यहाँ बुलाया और उनके साथ बिश्वासघात करके उनको मरवा डाला! इसके बाद फिर वह सूबेदार अपने साथियों सहित वहीं आनन्द-उत्सव मनाते हुए रहने लगा। वालेसको जब यह ख़बर मिली तब वह तुरन्त ही अपने मित्रोंके साथ उस सूबेदारके महलमें पहुँचा; और उसके सब दरवाज़े एकदम बन्द करके उसने उसमें आग लगा दी।

इसके बाद वालेसकी सेना खूब बढ़ गई; परन्तु उनमें होलीके फगुआरोंकी ही संख्या अधिक थी। उन्होंने जब देखा कि अँगरेज़ोंकी सेना निकट आ रही है तब उनमेंसे कितनोंहीने तो 'हरवाइन' में अँगरेज़ोंसे सुलह कर ली। इससे उनके प्राण तो बच गये; पर बदनामी बहुत हुई और जान पड़ा कि उनमें पुरुषार्थ बिलकुल ही नहीं था। उस समय वालेसकी सेना बहुत कम हो गई थी; पर वह अपने इरादेसे नहीं टला। क्योंकि उसके प्राणोंके लिये प्राण देने वाले कुछ साथी अबतक उसका साथ दिये हुए थे। फ़ोर्थ नदीसे उत्तरकी ओर स्टर्लिंगमें उनकी छावनी पड़ी थी। और उसके सामने ही दूसरी ओर अँगरेज़ी सेनाकी छावनी पड़ी थी।•रेन इस सेनाका अध्यक्ष था। उसने समझा कि स्काच सेना बहुत थोड़ी है और वह हमारी सेनाके सामने पल भर भी नहीं ठहर सकती। इस लिए उसने दो हलकारोंके द्वारा वालेससे कहला भेजा कि "तुम सब हमारी शरणमें आ जाओ, हम तुम्हें जीवदान देते हैं।" वालेसने उन हलकारोंसे कहा—"इंग्लैंडका राजा हमें जीवदान दे, इसमें मुझे कुछ बड़ी प्रतिष्ठा नहीं जान पड़ती। मैं जो यहाँ पड़ा हुआ हूँ वह कुछ तुमसे सन्धि करनेके लिए नहीं। मैं तो युद्ध करके अपने देशको स्वतंत्र करनेके लिए यहाँ पड़ा हुआ हूँ। अँगरेज़ोंसे जाकर कह दो कि आओ, तुम बेखटके हमपर धावा करो, हम तुम्हारी डाढ़ें उखाड़ कर तुम्हारे हाथमें रख देनेके लिए तैयार हैं!"

यह सन्देशा सुन कर अँगरेज़ लोग बड़े बिगड़े। उन्होंने एक दम स्काच लोगोंपर हमला कर दिया। उस समय उनका मुख्य सेनापति क्रेसिंगहाम था। स्काच लोग इस युद्धमें अत्यन्त वीरताके साथ लड़े और उन्होंने अँगरेज़ोंको बिलकुल पराजित कर दिया। वे प्राण बचाकर स्वदेशकी ओर भागे। इस प्रकार स्काटलैंड अँगरेज़ोंके संकटसे छूट कर स्वतंत्र हो गया। और उसका प्रभुत्व वालेसको प्राप्त हुआ।

पर यह स्थिति बहुत दिनोंतक स्थिर न रह सकी। इङ्गलैंडके तत्कालीन राजा एडवर्डने फ़ालकर्क नामक मुक़ाममें स्काच लोगोंसे बड़ा भारी युद्ध किया और उन्हें पराजित करके स्काटलैंडको फिरसे अपने अधीन कर लिया। परन्तु वालेस इस समय भी पहाड़ोंमें छिपा हुआ भटकता ही रहा। अन्तमें सर जान कांटीथ नामक एक स्काच मनुष्यने विश्वासघात करके उसे अँगरेज़ोंके हाथमें दे दिया उस समय जब उसपर राजद्रोहके अभियोगमें मुक़दमा चलाया गया तब वालेसने कहा कि "एडवर्ड न मेरा राजा है और न मैं उसकी प्रजा ही हूँ; इसलिए मेरा राजद्रोह सिद्ध नहीं हो सकता।" इसके बाद उसपर अनेक अँगरेज़ोंके बध करनेका अभियोग लगाया गया, तब उसने इस प्रकार उत्तर दिया—"हाँ, यह सच है कि मैंने बहुतसे अँगरेज़ोंको मारा है; परन्तु मारा मैंने इसी लिए है कि वे मेरी प्यारी जन्मभूमिको जीतने और उसे कष्ट देनेके लिए आये थे। उनको मारनेका मुझे कुछ भी पश्चात्ताप नहीं है; बल्कि इस

बातका खेद होता है कि मैंने और बहुतसे अँगरेजोंको क्यों नहीं मारा !" इसके बाद वालेसका सर काट डाला गया।



प्रतिष्ठा हथियारोंमें ही है !

कुछ वर्ष पहले तुर्क लोगोंने ग्रीस देशका एक प्रान्त अपने अधीन करनेका निश्चय किया। उस प्रान्तका नाम 'सुली' था। वहाँके लोग तुर्कोंके राजाकी कुछ भी परवाह न करते थे। उन लोगोंको जीतनेके लिए अलीपाशाने उस प्रान्तपर चढ़ाई कर दी। उस समय 'जावेला' उन लोगोंका नेता था। सुलियट लोग बड़े तेजस्वी थे, अतएव उन्होंने पाशाकी सेनाको पहले पहल खूब ही छकाया। परन्तु उसकी शक्ति बहुत बड़ी थी; इस कारण अन्तमें सुलियट लोग पराजित हो गये; और उनका नेता जावेला भी पकड़ लिया गया। इसके बाद जब वह अलीपाशाके सामने लाया गया तब अलीपाशाने उसे अपने वशमें करनेके लिए उसका बड़ा आदर-सत्कार किया और उसे बहुत बड़ी बड़ी भेटें देनेका वादा करके कहा कि "यदि सारे सुलियट लोगोंको शान्तिके साथ तुम हमारे अधीन कर दोगे तो हमारे महाराज तुमपर बड़े प्रसन्न होंगे; परन्तु यदि तुम इस बातको स्वीकार न करोगे तो तुम्हारे शरीरकी खाल निकाल ली जायगी और तुम्हारा बध किया जायगा।

इसपर तुम विचार करो।" इसपर जावेलाने उत्तर दिया—"पहले मुझे तो आप छोड़िए; क्योंकि मैं जबतक आपके अधिकारमें हूँ तबतक सुलियट लोग कभी आपके अधीन नहीं होंगे। मैं उन लोगोंके पास जाकर उनको समझाता हूँ और उनको आपके अधीन करनेका प्रयत्न करता हूँ। देखना चाहिए फिर क्या होता है। पर इसके लिए सबसे पहले आपको मुझे छोड़ना चाहिए।" इसपर अलीपाशाने पूछा कि "मैं यह कैसे समझूँ कि तुम फिर अपने लोगोंसे मिल कर हमारे पास लौट आओगे ?" इसपर जावेला अपने लड़के 'फोटो' की ओर संकेत करके बोला—"मैं अपने लड़केको आपके पास रखे जाता हूँ। यह मुझे प्राणोंसे भी अधिक प्रिय है और मेरे लोग मुझसे भी अधिक इसे चाहते हैं। इसे आप अपने पास रखिए।"

इसके बाद जावेलाने जाकर उन लोगोंसे यह नहीं कहा कि तुम गौकी तरह अलीपाशाकी शरणमें चले जाओ—किन्तु उसने कहा कि "इस समय तुम जितना लड़ते हो उससे भी अधिक दृढ़ता, प्रबलता और जोशके साथ लड़ कर अपनी रक्षा करो। चाहे कुछ भी हो जाय, परन्तु तुम अलीपाशाके अधिकारका भार अपने सिरपर कदापि न उठाओ।" उस समय किसीने उसे उसके लड़केकी याद दिला कर कहा कि यह तो सोचो कि तुम्हारे लड़केके प्राण कैसे बचेंगे ! यह सुन कर जावेलाके हृदयमें स्वदेश-स्वातंत्र्यकी उत्कट इच्छा और पुत्र-प्रेमका बड़ा तुमुल युद्ध मचा ;

परन्तु अन्तमें उत्कट स्वदेश-स्वातंत्र्यकी इच्छाका ही विजय हुआ। उसने स्वयं अलीपाशाको उस समय लिखा कि "मूर्ख अली-पाशा! तुझे नहीं मालूम कि मैं सेरके लिए सवासेर हूँ; और इस बातका मुझे बड़ा ही सन्तोष है। मैं तेरे हाथसे जो छूट कर आया हूँ वह इसलिए कि चोरोंके हाथसे स्वदेशको छुड़ा सकूँ। मैं यह भली भाँति जानता हूँ कि इससे मेरे लड़केके प्राण नहीं बचेंगे। पर यह तू अच्छी तरह समझ रखना कि मैं अपने मरनेके पहले उसका बदला अवश्य चुका लूँगा। तेरे समान कुछ लोग मुझे निर्दय पाषाण-हृदय पिता कहेंगे और यह कहते फिरेंगे कि मैंने अपना छुटकारा करनेके लिए लड़केको मृत्युके मुखमें डाल दिया। वे कुछ भी कहें, परन्तु मैं यही कहूँगा कि तूने मेरा देश ले लिया होता तो मेरे लड़के, मेरे कुटुम्ब और अन्य लोगोंको तथा मेरे देश-भाइयोंको अवश्य मार डाला होता; और उस दशामें अपने लड़केका बदला चुकानेका मुझे अवसर भी नहीं मिला होता। अब यदि मुझे विजय प्राप्त होगा तो मेरे और भी लड़के होंगे। और यदि मेरा लड़का स्वदेश-हितार्थ प्राण देनेको तैयार न हुआ तो उसका जीना मरना बराबर ही है। वह मेरा पुत्र होनेके योग्य नहीं। उसका मरना ही अच्छा है। वह यदि धैर्यके साथ मरनेको तैयार न होगा तो उसका ग्रीस देशमें जन्म लेना ही व्यर्थ है। उसे मैं ग्रीसका नहीं समझूँगा। इस लिए दुष्ट निमकहराम! अब तू तैयार हो जा, मैं तुझसे बदला लेनेको तैयार हूँ।"

इसपर अलीपाशाने अन्य कैदियोंके साथ फोटोको भी राजधानीमें भेज दिया। वहाँ मुख्य मंत्री इफेंडीके सामने वह उपस्थित किया गया। उस समय उस अल्पवयस्क लड़केका तेजस्वी मुख देख कर उसे धमकी देनेके लिए कहा गया—"फोटो, तेरे बापने बड़ी बेईमानी की है, इसलिए अब हम तुझे आगमें डाल कर जला डालेंगे।" फोटोने बिलकुल न डरते हुए उत्तर दिया—"महाराज, आप ऐसा कदापि न करें; क्योंकि मेरा बाप यदि जीत गया और आप उसके हाथ पड़ गये तो वह आपसे बदला चुकाये बिना कदापि न रहेगा।" सुन कर मंत्री और उसके राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर उन्होंने उस लड़केको जानसे न मार कर एक टापूमें क़ैद कर दिया।

कुछ दिन बाद सुलह करनेके विचारसे अलीपाशाने और भी चौबीस सुलियट लोगोंको अपने पास बुलाया। उन लोगोंके पहुँचनेपर उसने उनसे कहा कि यदि तुम्हारे सब लोग हमारे राज्याधिकारको स्वीकार न करेंगे तो हम तुम सबको बहुत कष्ट देकर मार डालेंगे। इसपर उन्होंने स्पष्ट उत्तर दिया—"अलीपाशा! तेरे इस विश्वासघात-पूर्ण बर्तावसे तेरी कीर्तिमें कलंक लगता है और हम लोगोंका जो यह निश्चय है कि हम लोग तेरे अधिकारको स्वीकार नहीं करेंगे, वह तेरे ऐसे बर्तावसे और भी अधिकाधिक दृढ़ हो जायगा। तुझे यह मालूम ही है कि हमने अपने राष्ट्रकी स्वतंत्रताके लिए सत्रह जनोंकी बलि दी है। उन्हींमें हम चौबीसोंको भी

तू और समझ। हम लोगोंका स्मरण हमारे देश-बांधवोंके अन्तःकरणमें चिरकालतक जागृत रहेगा; पर हमारे कारण हमारा प्रजासत्ताक-राज्य तेरे पैरों तले कदापि नहीं आवेगा। और अब इसके आगे हमारी तेरी सुलह भी कभी नहीं होनेकी और न हम करना ही चाहते हैं। इसका कारण यही है कि तेरी बातका कुछ ठिकाना नहीं।"

इसके बाद अलीपाशाने उस प्रांतको मोल लेनेका विचार प्रकट किया। इस बातको भी उन लोगोंने स्वीकार नहीं किया। तब उसने इनके कुछ नेताओंको धनका लोभ दे फुसला कर अपना कार्य साधना चाहा। तदनुसार उसने सुलियट लोगोंके डीमोजवी नामक एक बड़े आदमीसे कहा कि यदि आप हमारा यह काम कर देंगे तो आपको आठ लाख रुपया नक़द दिया जायगा; और इसके सिवाय आपको एक बहुत ऊँचा पद भी प्रदान किया जायगा। इसपर डीमोजवीने तुरन्त ही उत्तर लिख भेजा कि "वज़ीर साहब, आप जो मुझ पर इतनी कृपा करते हैं उसका मैं बड़ा उपकार मानता हूँ। परन्तु मैं आपसे इतनी ही प्रार्थना करता हूँ कि आप ऐसे द्रव्यकी थैलियाँ मेरे पास न भेजा करें; क्योंकि इस प्रकारका धन गिना कैसे जाता है यह मुझे मालूम नहीं है। और कदाचित् मैं गिन भी सकता; पर यह आप ध्यानमें रखिए कि मेरे सम्पूर्ण राष्ट्रकी तो बात ही अलग है—मेरे राष्ट्रकी एक

छोटेसे कंकड़की क़ीमत भी आपके राज्यकी सारी सम्पत्तिसे सौगुनी किंबहुना सहस्रगुनी है, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। और यही बात आप आदर-सत्कारके विषयमें भी समझिए। सुलियट लोगोंकी प्रतिष्ठा हथियारोंमें ही है। और मैंने प्रण कर लिया है कि तलवारके द्वारा अपना नाम अजरामर करके मैं अपने राष्ट्रकी रक्षा करूँगा !"

॥ समाप्त ॥